राष्ट्रीय
डेरी
विकास
बोर्ड

मवेशियों के प्रमुख रोगों के लिए परंपरागत उपचार विधियाँ

TDU
INSTITUTE OF TRANSDISCIPLINARY HEALTH SCIENCES & TECHNOLOGY

थनैला

ग्वारपाठा/घृतकुमारी

हल्दी पाउडर

नींबू

चूना

जल आधारित अनुप्रयोग

सामग्री

एक दिन की दवा के लिए: घृतकुमारी (साबूत पत्ती) - 250 ग्राम, हल्दी पाउडर- 50 ग्राम, चूना- 15 ग्राम, नींबू- 6 नग

तैयार करने की विधि

(i) घृतकुमारी की पत्तियों से कांटे हटाने के बाद इनको छोटे-छोटे टुकड़ों में काट लें। (ii) हल्दी पाउडर एवं चूने के साथ इसे अच्छे से पीसकर लाल रंग का पेस्ट बना लें।

प्रयोग की विधि

(i) पशु के सभी थनों (स्वस्थ थन को भी) को पूरी तरह से दुहकर, साफ कर लें। (ii) एक मुट्ठी हल्दी-चूना-घृतकुमारी पेस्ट में 200 मिली पानी मिलाकर इसे पतला कर लें। (iii) पानी में घोले गए इस पेस्ट को दिन में 10 बार 5 दिनों के लिए पशु के थन पर लगाएँ एवं ध्यान रखें कि हर बार प्रयोग की विधि की चरण (i) पालन करें। (iv) दिन के आखरी प्रयोग तेल आधारित होनी चाहिए (v) एक बार में दो नींबू खिलाएं (दो हिस्सों में कटा हुआ), यह प्रयोग दिन में तीन बार 3 दिनों तक करें।

यू ट्यूब पर वीडियो देखने के लिए इस QR कोड को स्कैन करें।

थनैला

ग्वारपाठा/घृतकुमारी

सरसों/तिल का तेल

नींबू

चूना

हल्दी पाउडर

तेल आधारित अनुप्रयोग

सामग्री

एक दिन की दवा के लिए: घृतकुमारी (साबूत पत्ती) - 250 ग्राम, हल्दी पाउडर- 50 ग्राम, चूना- 15 ग्राम, नींबू- 6 नग, सरसों/तिल का तेल- 600 मिली

तैयार करने की विधि

(i) घृतकुमारी की पत्तियों से कांटे हटाने के बाद इनको छोटे-छोटे टुकड़ों में काट लें। (ii) हल्दी पाउडर एवं चूने के साथ इसे अच्छे से पीसकर लाल रंग का पेस्ट बना लें।

प्रयोग की विधि

(i) पशु के सभी थनों (स्वस्थ थन को भी) को पूरी तरह से दुहकर, साफ धोकर सुखा लें। (ii) एक मुठ्ठी हल्दी-चूना-घृतकुमारी पेस्ट में 200 मिली सरसों या तिल का तेल मिलाकर इसे पतला कर लें। (iii) तेल में घोले गए इस पेस्ट को दिन में 3 बार 5 दिनों के लिए पशु के थन पर लगाएँ एवं ध्यान रखें कि हर बार प्रयोग की विधि की चरण (i) पालन करें। (iv) एक बार में दो नींबू खिलाएं (दो हिस्सों में कटा हुआ), यह प्रयोग दिन में तीन बार 3 दिनों के लिए करें।

यू ट्यूब पर वीडियो देखने के लिए इस QR कोड को स्कैन करें।

स्तनाग्र अवरुद्ध होने की स्थिति में

नीम का पर्णवृंत

हल्दी पाउडर

मक्खन

अथवा

घी

सामग्री

ताजा तोड़ा गया साफ नीम पर्णवृंत, हल्दी पाउडर, मक्खन अथवा घी

तैयार करने की विधि

(i) नीम के पर्णवृंत को स्तनाग्र की लम्बाई जितना या आवश्यकता अनुसार शीर्ष की तरफ से काट लें। (ii) नीम पर्णवृंत पर हल्दी पाउडर एवं मक्खन/घी के मिश्रण को अच्छी तरह लगा लें। (iii) प्रभावित स्तन के छिद्र को अच्छी तरह से साफ करें।

प्रयोग की विधि

(i) मिश्रण लगाए हुए नीम पर्णवृंत को डंठल की ओर से पकड़कर रोग ग्रसित स्तनाग्र में घड़ी की सुई की दिशा के विपरीत घुमाते हुए अंदर घुसाएं। (ii) दूध निकालने के बाद प्रत्येक बार नए नीम पर्णवृंत का प्रयोग करें।

यू ट्यूब पर वीडियो देखने के लिए इस QR कोड को स्कैन करें।

थन में शोफ (इडिमा)

सरसों/तिल का तेल

हल्दी पाउडर

लहसुन

सामग्री (एक बार प्रयोग के लिए)

तिल अथवा सरसों का तेल - 200 मिलि, हल्दी पाउडर - 1 मुट्ठी, लहसुन- 2 कलियाँ

तैयार करने की विधि

(i) तेल को गरम करके उसमें हल्दी पाउडर एवं बारीक काटा हुआ लहसुन डालें। (ii) मिश्रण को अच्छे से मिलाएं एवं सुगंध आने पर आंच से उतार लें (उबालने की आवश्यकता नहीं है) (iii) मिश्रण को ठंडा होने दें।

प्रयोग की विधि

(i) इस मिश्रण को सूजन वाले हिस्से या पूरे थन पर दबाव के साथ गोल घुमाते हुए लगाएं। (ii) इसे 3 दिन तक प्रतिदिन 4 बार प्रयोग करें।

नोट: इस विधि को प्रयोग में लेने से पूर्व सुनिश्चित कर लें कि पशु को थनैला रोग नहीं है।

यू ट्यूब पर वीडियो देखने के लिए इस QR कोड को स्कैन करें।

जेर नहीं गिरना

मूली

भिंडी

गुड़

नमक

सामग्री:

मूली - 1 नग, भिंडी - 1.5 किलो, गुड़ - आवश्यकतानुसार, नमक - आवश्यकतानुसार

तैयार करने की विधि:

भिंडी को दो हिस्से में काट लें।

प्रयोग की विधि:

(i) ब्याने के 2 घंटे के अंदर पशु को एक पूरी मूली खिला दें। (ii) अगर पशु ब्याने के 8 घंटे तक जेर नहीं गिराता है तो 1.5 किलो ताजी भिंडी को नमक एवं गुड़ के साथ पशु को खिला दें। (iii) अगर पशु ब्याने के 12 घंटे बाद भी जेर नहीं गिराता है तो, पशु के शरीर के एकदम पास से जेर में गाँठ बांध दें और गाँठ के 2 इंच नीचे से इसे काटकर छोड़ दें। गाँठ पशु के शरीर के अंदर चली जाएगी। (iv) हाथों से जेर निकालने का प्रयास कभी नहीं करें। (v) 4 सप्ताह तक, सप्ताह मे एक बार पशु को एक मूली खिलाएं।

यू ट्यूब पर वीडियो देखने के लिए इस QR कोड को स्कैन करें।

बांझपन की समस्या

मूली

घृतकुमारी/ग्वारपाठा

हडजोड

करी पत्ता

नमक

सहजन

गुड़

हल्दी पाउडर

प्रयोग की विधि

(i) मद चक्र के पहले या दूसरे दिन उपचार शुरू करें। (ii) दिन में एक बार नीचे दिये गए क्रमानुसार गुड़ या नमक के साथ ताजा अवस्था में खिलाएं: (a) 1 मूली रोजाना 5 दिन तक (b) ग्वारपाठा/घृतकुमारी की 1 पत्ती रोजाना, 4 दिन तक। (c) सहजन की 4 मुट्ठी पत्तियाँ रोजाना, 4 दिन तक। (d) 4 मुट्ठी हडजोड़ के तने रोजाना, 4 दिन तक। (e) 4 मुट्ठी करी पत्तियाँ, 5 ग्राम हल्दी पाउडर के साथ मिलाकर 4 दिन तक। (f) अगर पशु गाभिन नहीं होता है, तो यह उपचार एक बार फिर दोहराए।

यू ट्यूब पर वीडियो देखने के लिए इस QR कोड को स्कैन करें।

शरीर/अंग बाहर

ग्वारपाठा/घृतकुमारी जेल

हल्दी पाउडर

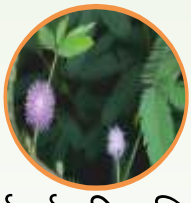

छुईमुई की पत्तियाँ

सामग्री:

ग्वारपाठा जेल - (1 पूरी पत्ती से निकला), हल्दी - 1 चुटकी, छुईमुई की पत्तियाँ - 2 मुठ्ठी

तैयार करने की विधि

(i) 1 पूरी ग्वारपाठा पत्ती से जेल निकाल लीजिये। (ii) इसे चिपचिपापन हटने तक बार बार धोये। (iii) पानी मिलाकर आयतन 1 लीटर करें। (iv) अब इसमें एक चुटकी हल्दी पाउडर मिलाकर आधा रहने तक उबालें और फिर ठंडा कर लें। (v) छुईमुई की पत्तियों को अलग से पीसकर पेस्ट बना लें।

प्रयोग की विधि

(i) बाहर निकले हुए अंग/हिस्से को ठीक से साफ कर लें। (ii) बाहर निकले हिस्से पर इस जेल को छिड़कें। (iii) जेल के सूख जाने पर बाहर निकले हिस्से पर छुईमुई की पत्तियों का पेस्ट लगाएँ। (iv) जब तक अंग अंदर नहीं चला जाये, यह प्रयोग दोहराते रहें।

यू ट्यूब पर वीडियो देखने के लिए इस QR कोड को स्कैन करें।

खुरपका-मुंहपका रोग में मुँह के छाले

जीरा

काली मिर्च

लहसुन

हल्दी पाउडर

गुड़

मेथीदाना

नारियल

सामग्री (एक खुराक के लिए)

जीरा-10 ग्राम, मेथीदाना-10 ग्राम, काली मिर्च-10 ग्राम, हल्दी पाउडर-10 ग्राम, लहसुन-4 कलियाँ, नारियल- 1 नग, गुड़- 120 ग्राम

तैयार करने की विधि

(i) जीरा, मेथी एवं काली मिर्च को 20-30 मिनिट के लिए पानी में भिगा दें। (ii)सभी सामग्रियों को बारीक पीसकर पेस्ट बना लें। (iii) एक सम्पूर्ण नारियल के बुरादे को इस मिश्रण में हाथ से मिलाएं। (iv) प्रत्येक बार प्रयोग के लिए इस मिश्रण को ताजा बनाएं।

प्रयोग करने की विधि

(i) इस मिश्रण को मुँह के अंदर, जीभ एवं तालु पर धीरे-धीरे लगाएं।
(ii) इस विधि को दिन में तीन बार 3-5 दिनों तक प्रयोग करें।

यू ट्यूब पर वीडियो देखने के लिए इस QR कोड को स्कैन करें।

खुरपका मुंहपका रोग में पैरों के घाव/अन्य घाव

कुप्पी पौधे के पत्ते

नीम के पत्ते

लहसुन

नारियल का तेल

अथवा

तिल का तेल

मेहँदी

हल्दी पाउडर

तुलसी

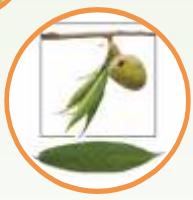

सीताफल के पत्ते

सामग्री

कुप्पी के पत्ते- 1 मुट्ठी, लहसुन-10 कलियाँ, नीम के पत्ते- 1 मुट्ठी, नारियल/तिल का तेल - 500 मिली, हल्दी पाउडर -20 ग्राम, मेहँदी पत्ते- 1 मुट्ठी, तुलसी पत्ते- 1 मुट्ठी

तैयार करने की विधि

(i) सभी सामग्रियों को पीसकर पेस्ट बना लें। (ii) इसमें 500 मिली नारियल/तिल का तेल मिलाकर उबालें और ठंडा कर लें।

प्रयोग की विधि

(i) घाव को साफ करें और इस मिश्रण को घाव पर सीधे ही या पट्टी में बांधकर लगाएँ। (ii) अगर घाव में कीड़े पड़ें हो तो पहले दिन, नारियल या तिल का तेल में कपूर मिलाकर अथवा सीताफल की पत्तियों का पेस्ट बनाकर लगाएं।

यू ट्यूब पर वीडियो देखने के लिए इस QR कोड को स्कैन करें।

बुखार

धनिया

लहसुन

तेज पत्ता

काली मिर्च

जीरा

हल्दी पाउडर

चिरायता

पान के पत्ते

तुलसी

नीम के पत्ते

बबुई तुलसी के पत्ते

गुड़

छोटे प्याज़ / प्याज़

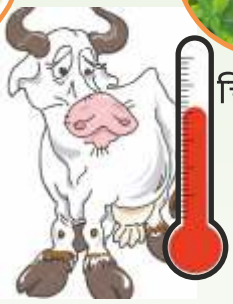

सामग्री (एक दिन की दवा के लिए)

लहसुन- 2 कलियाँ, धनिया- 10 ग्राम, जीरा- 10 ग्राम, तुलसी पत्ता- 1 मुट्ठी, तेज पत्ता - 10 ग्राम, काली मिर्च- 10 ग्राम, पान के पत्ते- 5 नग, छोटे प्याज / प्याज़ - 2 नग, हल्दी पाउडर - 10 ग्राम, चिरायता के पत्ते का पाउडर - 20 ग्राम, बबुई तुलसी के पत्ते-1 मुट्ठी, नीम के पत्ते- 1 मुट्ठी, गुड़- 100 ग्राम

तैयार करने की विधि

(i) जीरा, काली मिर्च एवं धनिये को 15 मिनट के लिए पानी में भिगा दें। (ii) सभी सामग्रियों को पीसकर पेस्ट बना लें।

प्रयोग करने कि विधि

(i) थोड़ी थोड़ी मात्रा में इस मिश्रण को सुबह शाम पशु को खिलाएं।

यू ट्यूब पर वीडियो देखने के लिए इस QR कोड को स्कैन करें।

दस्त/अतिसार

मेथी दाना

काली मिर्च

प्याज़

खसखस

जीरा

हल्दी पाउडर

लहसुन

करी पत्ता

गुड़

हींग

सामग्री (एक दिन की दवा के लिए)

मेथीदाने-10 ग्राम, प्याज़-1 नग, लहसुन-1 कली, जीरा- 10 ग्राम, हल्दी पाउडर- 10 ग्राम, करी पत्ता- 1 मुट्ठी, खसखस- 5 ग्राम, काली मिर्च - 10 ग्राम, गुड़ - 100 ग्राम, हींग- 5 ग्राम

तैयार करने की विधि

(i) जीरा, हींग, खसखस एवं मेथी दानों को सूखा धुवाँ निकलने तक भून लें।

(ii) भुने हुए बीजों को ठंडा कर पीस लें। (iii) अब इसमें अन्य सामग्रियाँ मिलाकर पीस लें एवं पेस्ट बना लें।

प्रयोग की विधि

(i) मिश्रण के छोटे छोटे लड्डू बना लें।

(ii) तैयार लड्डू पशु को दिन में एक बार, 1-3 दिनों तक खिलाएँ जब तक कि स्थिति सुधर न जाए।

यू ट्यूब पर वीडियो देखने के लिए इस QR कोड को स्कैन करें।

आफरा एवं अपच

प्याज़

काली मिर्च

लहसुन

पान के पत्ते

लाल मिर्ची

हल्दी पाउडर

गुड़

अदरक

जीरा

नमक

सामग्री (एक दिन की दवा के लिए)

प्याज़ -100 ग्राम, लहसुन -10 कलियाँ, लाल मिर्ची -2 नग, जीरा - 10 ग्राम, हल्दी पाउडर-10 ग्राम, गुड़- 100 ग्राम, काली मिर्च- 10 ग्राम, पानके पत्ते- 10 नग, अदरक - 100 ग्राम

तैयार करने की विधि

(i) काली मिर्च एवं जीरे को 30 मिनट के लिए पानी में भिगो दें।
(ii) सभी सामग्रियों को पीसकर पेस्ट बना लें।

प्रयोग की विधि

(i) तैयार पेस्ट के छोटे छोटे लड्डू बना लें।(ii) तैयार लड्डू को दिन में 3-4 बार, तीन दिनों तक पशु को थोड़े नमक के साथ खिलाएँ।

यू ट्यूब पर वीडियो देखने के लिए इस QR कोड को स्कैन करें।

कृमि

प्याज़

काली मिर्च

लहसुन

हल्दी पाउडर

नीम के पत्ते

जीरा

सरसों

गुड़

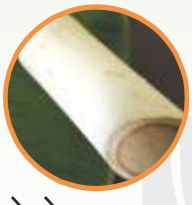

केले का तना

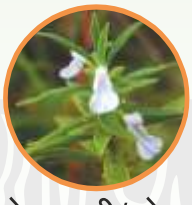

द्रोणपुष्पी/गोफा

करेला

सामग्री (एक दिन की दवा के लिए)

प्याज़-1 नग, लहसुन-5 कलियाँ, सरसों- 10 ग्राम, नीम के पत्ते- 1 मुट्ठी, जीरा- 10 ग्राम, करेला- 50 ग्राम, हल्दी पाउडर - 5 ग्राम, काली मिर्च- 5 ग्राम, केले का तना- 100 ग्राम द्रोणपुष्पी- 1 मुट्ठी, गुड़- 100 ग्राम

तैयार करने कि विधि

(i) जीरा, काली मिर्च एवं सरसों को 30 मिनट के लिए पानी में भिगो दें। (ii) सभी सामग्रियों को मिलाकर पीस लें और एक पेस्ट बनालें।

प्रयोग कि विधि

(i) मिश्रण के छोटे छोटे लड्डू बना लें। (ii) तैयार लड्डू को थोड़े नमक के साथ दिन में एक बार पशु को खिलाएं। यह प्रयोग 3 दिन तक करें।

यू ट्यूब पर वीडियो देखने के लिए इस QR कोड को स्कैन करें।

चिंचड़ी/बाह्य परजीवी

लहसुन

हल्दी पाउडर

नीम के पत्ते

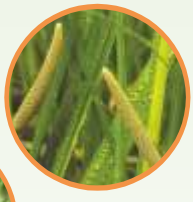

वच का कंद

चतुरंगी/लेंटाना

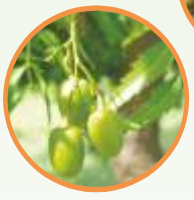
निमोली

तुलसी पत्ते

सामग्री

लहसुन- 10 कलियाँ, नीम के पत्ते- 1 मुट्ठी, निमोली- 1 मुट्ठी, वच के कंद- 10 ग्राम, हल्दी पाउडर - 20 ग्राम, चतुरंगी/लेंटाना के पत्ते- 1 मुट्ठी, तुलसी के पत्ते- 1 मुट्ठी

तैयार करने की विधि

(i) सभी सामग्रियों को पीस लें। (ii) इस मिश्रण में 1 लिटर साफ पानी मिलाएँ। (iii) बारीक छन्नी अथवा मलमल के कपड़े से छान लें। (iv) इस द्रव को स्प्रे बोतल में भर लें।

प्रयोग की विधि

(i) पशु के सम्पूर्ण शरीर पर स्प्रे करें। (ii) पशु गृह में मौजूद किसी दरार या सुराख़ में भी स्प्रे करें। (iii) इस द्रव में कपड़े को डुबोकर भी पशु के शरीर पर लगाया जा सकता है। (iv) जब तक चिचड़ी ख़त्म न हो, इस उपचार को सप्ताह में एक बार दोहराते रहें। (v) इस उपचार को दिन के गर्म समय में ही करें।

यू ट्यूब पर वीडियो देखने के लिए इस QR कोड को स्कैन करें।

चेचक/मस्सा/त्वचा का फटना

लहसुन

मक्खन

हल्दी पाउडर

जीरा

बबुई तुलसी के पत्ते

नीम के पत्ते

सामग्री

लहसुन-5 कलियाँ, हल्दी पाउडर -10 ग्राम, जीरा-15 ग्राम, बबुई तुलसी के पत्ते- 1 मुट्ठी, नीम पत्ता-1 मुट्ठी, मक्खन/घी-50 ग्राम

तैयार करने कि विधि

(i) जीरे को 15 मिनट के लिए पानी में भिगो दें।

(ii) सभी सामग्रियों को पीसकर पेस्ट बना लें।

(iii) मक्खन डालकर अच्छे से मिलाएँ।

प्रयोग करने की विधि

(i) चेचक/मस्से/फटी हुई त्वचा पर, ठीक होने तक यह मिश्रण बार-बार लगायें। (ii) मिश्रण लगाने से पहले त्वचा को अच्छे से साफ करके सुखा लें।

यू ट्यूब पर वीडियो देखने के लिए इस QR कोड को स्कैन करें।

एलर्जी होना / विष का असर / जहरीले कीट का डंक/दंश

पान के पत्ते

नमक

काली मिर्च

गुड़

सामग्री (एक खुराक के लिए)

(तमिल सिद्ध चिकित्सा के अनुसार: 3 राजा)

पान के पत्ते - 10, काली मिर्च - 10 ग्राम, नमक- 10 ग्राम,
गुड़ - आवश्यकतानुसार

तैयार करने कि विधि

(i) सभी सामग्रियों को पीसकर पेस्ट बना लें।

(ii) इसे गुड़ के साथ मिला लें।

प्रयोग करने की विधि

(i) इस दवा की खुराक को छोटे छोटे हिस्सों में खिलाएँ।

(ii) प्रतिदिन 3 खुराक पशु को दें 2 सप्ताह के लिए।

नोटः नाजुक स्थिति में विकल्प के तौर पर, इस दवा की 2-3 बूंदें (बिना गुड़ मिलाये) हर एक घंटे में पशु की आँखों में डालें।

यू ट्यूब पर वीडियो देखने के लिए इस QR कोड को स्कैन करें।

जोड़ों में सूजन

ग्वारपाठा/घृतकुमारी

लहसुन

चूना (कैल्सियम हाइड्रोक्साइड)

तिल का तेल

हडजोड़ का तना

हल्दी पाउडर

सामग्री

घृतकुमारी-100 ग्राम, चूना(कैल्सियम हाइड्रोक्साइड)-10 ग्राम, हडजोड़ का तना-100 ग्राम, हल्दी पाउडर - 15 ग्राम, लहसुन- 5 कलियाँ, तिल का तेल-1 लीटर

तैयार करने कि विधि

(i) सभी समग्रियों को पीसकर पेस्ट बना लें।

(ii) इस पेस्ट को 1 लीटर तिल के तेल में उबालें और ठंडा करें।

प्रयोग करने की विधि

(i) जोड़ के प्रभावित हिस्से पर इसे प्रतिदिन 4 से 5 बार लेप लगाएं।

(ii) दिन में 2 बार गरम पानी से प्रभावित हिस्से पर सेक करें।

यू ट्यूब पर वीडियो देखने के लिए इस QR कोड को स्कैन करें।

खाँसी

अड़ूसा

काली मिर्च

तुलसी पत्ते

लहसुन

हल्दी पाउडर

गुड़

सामग्री (एक दिन की दवा के लिए)

अड़ूसा- 1 पत्ती, तुलसी- 1 मुट्ठी, लहसुन- 5 कलियाँ, हल्दी पाउडर - 10 ग्राम, काली मिर्च- 10 ग्राम, गुड़ - आवश्यकतानुसार

तैयार करने कि विधि

(i) काली मिर्च को पानी में 15-20 मिनिट भिगोकर अलग से पीस लें।
(ii) शेष सामग्रियों को मिलाकर पीस लें एवं गुड़ डालकर इसका पेस्ट बना लें।

प्रयोग करने की विधि

पशु के ठीक होने तक प्रतिदिन 2-3 बार खिलाएँ।

यू ट्यूब पर वीडियो देखने के लिए इस QR कोड को स्कैन करें।

खड़ा होने में असमर्थ पशु (ब्यॉत के बाद)

देसी मुर्गी के अंडे

हडजोड़ का तना

सहजन की पत्तियाँ

गुड़

सामग्री (एक खुराक के लिए)

देसी मुर्गी के अंडे-2 , सहजन की पत्तियाँ- 4 मुट्ठी, हडजोड़ का तना- 4 मुट्ठी, गुड़ - आवश्यकतानुसार

तैयार करने कि विधि

(i) बिना उबले, मुर्गी के ताजा अंडे लें।

(ii) सहजन की पत्तियों एवं हडजोड़ के तने को अलग अलग पीसें एवं इसमें गुड़ मिलाकर पेस्ट बना लें।

प्रयोग करने की विधि

(i) एक बार में देसी मुर्गी के 2 अंडे (शेल सहित) खिलाएँ (अंडे को खिलाने से पहले शेल में एक छोटा छेद बनाएं), यह प्रयोग दिन में 3 बार करें। (ii) सहजन के पत्ते के चार मुट्ठी पेस्ट को गुड़ के साथ खिलायें। (iii) प्रयोग विधि (ii) के 2 घंटे बाद हड़जोड़ के तने के चार मुट्ठी पेस्ट को गुड़ के साथ खिलायें। (iv) उपरोक्त प्रयोग विधि (ii) एवं (iii) को प्रत्येक दो घन्टे के अन्तराल पर खिलाते रहें। (v) चार दिन तक पशु को खड़ा करने का प्रयास न करें।

यू ट्यूब पर वीडियो देखने के लिए इस QR कोड को स्कैन करें।

कीटनाशक दवा/साइनाइड जहर/ फफूँद विष का असर

पान के पत्ते

सहजन की पत्तियाँ

काली मिर्च

नमक

गुड़

इमली

सामग्री

तीन राजा (एक खुराक के लिए)

पान की पत्तियाँ-10, काली मिर्च-10 ग्राम, नमक - 10 ग्राम, गुड़- आवश्यकतानुसार

अन्य सामग्री (एक दिन की दवा के लिए)

इमली- 1 किलो, पानी- 1 लीटर, 1 किलो सहजन की पत्तियों का रस

तैयार करने कि विधि

तीन राजाओं की विधि (तमिल सिद्ध चिकित्सा के अनुसार)

(i) पान की पत्तियों, काली मिर्च एवं नमक को मिलाकर पेस्ट बना लें।
(ii) इस पेस्ट को गुड़ के साथ मिला लें।

अन्य सामग्रियों की तैयारी

(i) इमली के गूदे को 15 मिनट पानी में भिगो दें। (ii) इस गूदे से रस निकाल लें। (iii) इसमें पानी, गुड़ एवं सहजन की पत्तियों का रस मिला दें। (iv) इसे अच्छे से मिलाएँ व एकसमान घोल बना लें।

प्रयोग करने की विधि

(i) तीन राजाओं की पहली खुराक दें। (ii) प्रत्येक 2 घंटे में इमली-सहजन-गुड़ का 200 मिली गाढ़ा घोल पशु को पिलाएं। (iii) बीच बीच में 3 राजाओं के एक एक खुराक देते रहें।

यू ट्यूब पर वीडियो देखने के लिए इस QR कोड को स्कैन करें।

दूध में रक्तस्राव

करी पत्ता

गुड़

सहजन की पत्तियाँ

नींबू

सामग्री (एक दिन की दवा के लिए)

करी पत्ता- 2 मुठ्ठी, सहजन की पत्तियाँ- 2 मुठ्ठी, गुड़- 100 ग्राम, नींबू- 6 नग

तैयार करने कि विधि

करी पत्ता एवं सहजन की पत्तियों को गुड़ के साथ पीसकर पेस्ट बना लें। नींबू को दो हिस्सों में काटें।

प्रयोग करने की विधि

(i) करी पत्ता एवं सहजन की पत्तियों का पेस्ट दिन में 2 बार ठीक होने तक पशु को खिलाएं। (ii) एक बार में दो नींबू खिलाएं (दो हिस्सों में कटा हुआ), यह प्रयोग दिन में तीन बार 3 दिनों के लिए करें।

नोट

इस विधि के साथ साथ थनैला की विधि भी प्रयोग करें|

यू ट्यूब पर वीडियो देखने के लिए इस QR कोड को स्कैन करें।

पशु का गर्मी/ताव में नहीं आना

मूली

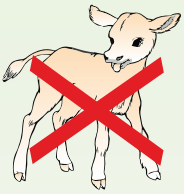

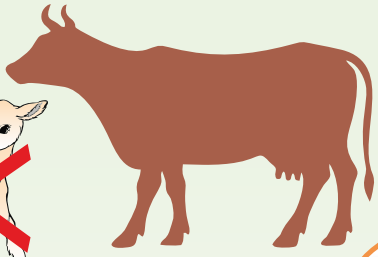

नमक

ग्वारपाठा/घृतकुमारी

हडजोड़ का तना

हल्दी पाउडर

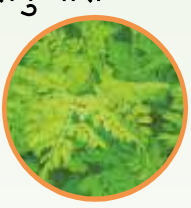
सहजन की पत्तियाँ

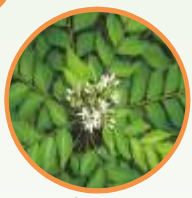
करी पत्ता

गुड़

तैयार करने कि विधि

इन सामग्रियों को निम्नलिखित क्रमानुसार दिन में 2 बार ताजा अवस्था में गुड़ एवं नमक के साथ खिलाएँ। (i) एक सफ़ेद मूली दिन में 2 बार, 5 दिनों तक। (ii) घृतकुमारी की एक साबुत पत्ती, दिन में 2 बार, 4 दिनों तक। (iii) चार मुठ्ठी सहजन की पत्तियाँ, दिन में 2 बार, 4 दिनों तक। (iv) चार मुठ्ठी हडजोड़ का तना, दिन में 2 बार, 4 दिनों तक। (v) चार मुठ्ठी करी पत्ता- 5 ग्राम हल्दी पाउडर के साथ, दिन में 2 बार, 4 दिनों तक।

नोट

उपचार शुरू करने से 15 दिन पहले पशु को कृमि नाशक दवा दें।

यू ट्यूब पर वीडियो देखने के लिए इस QR कोड को स्कैन करें।

प्रो. एन. पुण्यमूर्थी के मार्गदर्शन के अनुसार (profpunniya@gmail.com)
अधिक जानकारी के लिए संपर्क करें: anand@nddb.coop

राष्ट्रीय डेरी विकास बोर्ड, आणंद

फोनः 02692-260148, 260149 • फैक्सः 02692-260157

वेबसाइटः www.nddb.coop

facebook.com/NationalDairyDevelopmentBoard

July, 2021

यहाँ वर्णित सामान्य पौधे, मसाले और अन्य सामग्रियों को आम तौर पर सुरक्षित माना जाता है और यह केवल सुझाव मात्र है। उचित रोग निदान एवं प्रबंधन के लिए निकटवर्ती पशुचिकित्सक की सलाह ली जा सकती है।